कविता

14

एक अध्यापक की प्रेरणा

दिव्या राजपूत*

बच्चो, जागो!

सूरज निकला, भोर हुई,
बच्चो, जागो, है आज उमंग नई।
कल तक जो था, अब नहीं वो डर,
आज है आशा, हौंसला उस पर।

पढ़ना, लिखना, सीखना है खेल,
जिंदगी का ये अनमोल मेल।
प्यार से पढ़ो, मन लगाकर जानो,
अपने सपनों को पहचानों।

सपने देखो, दिल में जगाओ आग,
और करो मेहनत दिन रात।
सफलता मिलेगी जरूर, ये मेरा वादा है,
बस विश्वास रखो खुद पर, पक्का इरादा है।

रंग भरो तुम अपनी कल्पना में,
खो जाओ तुम सपनों की दुनिया में।
बनना है तुम्हें कुछ खास जरूर,
इसलिए मेहनत करो भरपूर।

तुम्हारे अंदर है वो शक्ति महान,
जो कर सकती है हर मुश्किल आसान।
खुद पर रखो विश्वास सदा,
चूमेगी तुम्हारे कदम सफलता।

किताबें हैं तुम्हारी दोस्त,
कलम है हथियार।
ज्ञान का उजाला फैलाओ,
मिटाओ सब अंधकार।

भविष्य तुम्हारा है उज्ज्वल देखो,
मेहनत से उसको तुम अब सींचो।
भारत माँ की शान बढ़ाओगे,
नाम अपना रौशन कर जाओगे।

देश को आगे ले जाना है साथ,
शिक्षा का उजाला फैलाना है हर हाथ।
बुराई से लड़ना, सच्चाई का पथ,
यही है तुम्हारा जीवन का सार, जान लो आज।

इसलिए उठो बच्चो, अब करो शुरुआत,
बनो अच्छे इंसान, बदलो ये हालात।
जिंदगी का हर पल, एक मौका है खास,
अपने देश और दुनिया के लिए बनो एक आस।

**कनिष्ठ परियोजना अध्येता,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110 016